**1936F Maharaja Rajendra Singh**

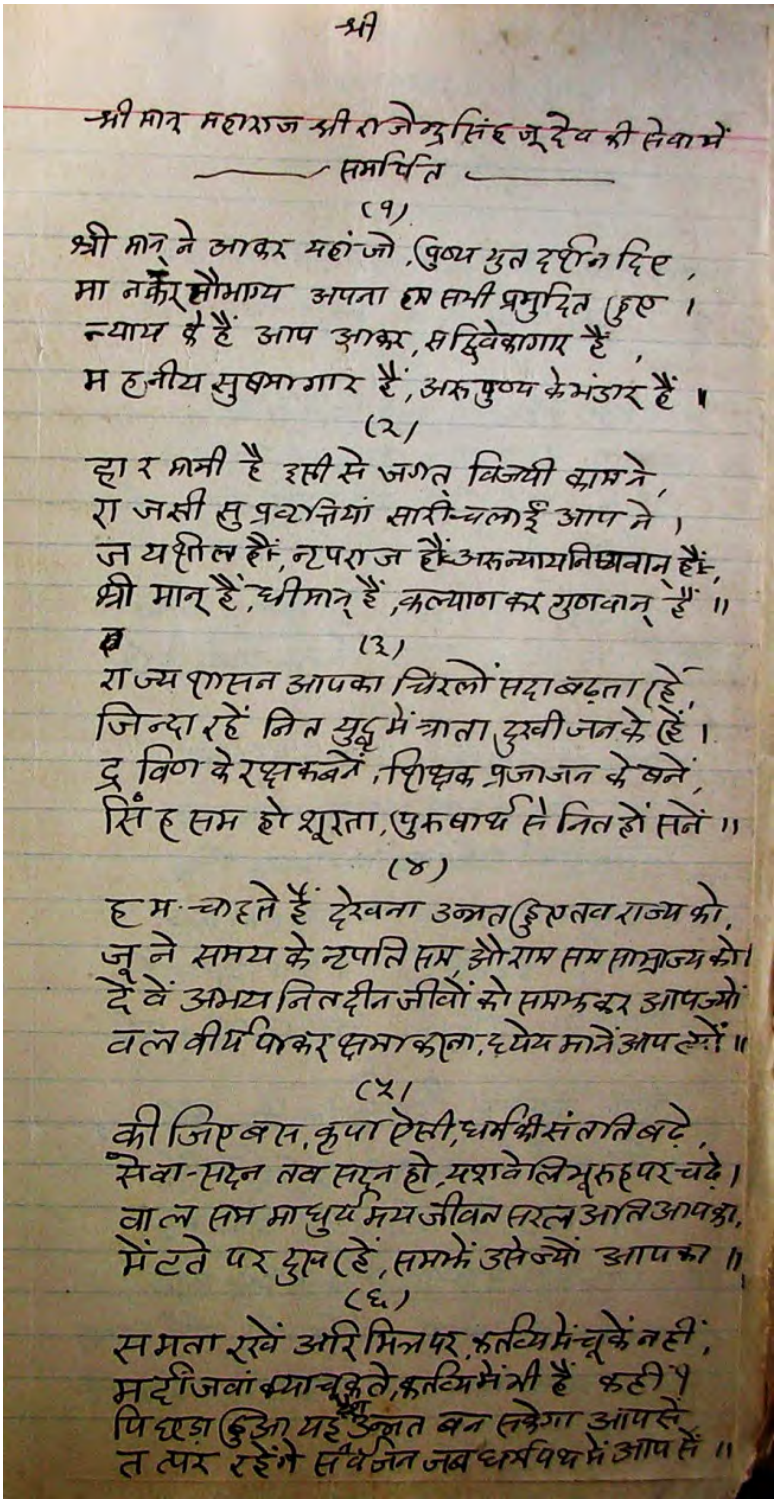

श्री

श्री मान् महाराज श्री राजेन्द्र सिंह जू देव की सेवा में

समर्पित

(1)

श्री मान् ने आकर यहां जो, पुण्य युत दर्शन दिए,
मानकर सौभाग्य अपना हम सभी प्रमुदित हुए।
न्याय के हैं आप आकर, सद्विवेकागार हैं,
महनीय सुषमागार हैं, अरु पुण्य के भंडार हैं।

(2)

हार मानी है इसी से जगत विजयी काम ने,
राजसी सुप्रवृत्तियां सारी चलाईं आप ने।
जयशील हैं, नृपराज हैं, अरु न्यायनिष्ठावान हैं,
श्री मान् हैं, धीमान् हैं, कल्याण कर गुणवान् हैं॥

(3)

राज्य शासन आपका चिरलों सदा बढ़ता रहे,
जिन्दा रहें नित युद्ध में त्राता दुखी जन के रहें।
द्रविण के रक्षक बनें, शिक्षक प्रजाजन के बनें,
सिंह सम हो शूरता, पुरुषार्थ से नित हों सनें॥

(4)

हम चाहते हैं देखना उन्नत हुए तव राज्य को,
जू ने समय के नृपति सम, औ राम सम साम्राज्य को।
देवें अभय नित दीन जीवों को समझ कर आप ज्यों
वल वीर्य पाकर क्षमा करना ध्येय मानें आप त्यों॥

(5)

कीजिए बस, कृपा ऐसी, धर्म की संतति बढ़े,
सेवा-सदन तव सदन हो, यशवेलि भूरुह पर चढ़े।
वाल सम माधुर्य मय जीवन सरल अति आपका,
मेंटते पर दुख रहें, समझें उसे ज्यों आपका॥

(6)

समता रखें अरि मित्र पर, कर्तव्य में चूकें नहीं,
मर्दी जवां क्या चूकते, कर्तव्य में भी हैं कहीं?
पिछड़ा हुआ यह उन्नत बन सकेगा आपसे,
तत्पर रहेंगे सर्व जन जब धर्मपथ में आपसे॥